ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol-2* Issue-12* January- 2018
Innovation The Research Concept

शैलेश मटियानी का कथा–संसार

शारदा शर्मा
विभागाध्यक्ष,
हिन्दी विभाग,
के० बी० महिला महाविद्यालय,
हजारीबाग

सारांश

शैलेश मटियानी जी बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न कथाकार थे। उनकी समस्त रचनाओं में यथार्थ की झलक मिलती है चाहे वह कबूतरखाना उपन्यास हो या होलदार, चौथी मुट्ठी या एक मूठ सरसों – सभी में यथार्थ का कटू सत्य ही दर्शाता है। ऐसी मार्मिक एवं पारदर्शी रचनाएँ विरले ही मिलती है। इनकी रचनाओं में भारतीयता की पहचान दिखती है। समस्त रचना सृजन हर बार पढ़ने पर नई, कुछ और नई लगती है और उसमें नए–नए अर्थ खुलते और जगमगाते नजर आते हैं।

मुख्य शब्द : प्राकृतिक सौन्दर्य, कथा–संसार, कथाकार

प्रस्तावना

आधुनिक कथाकारों में शैलेश मटियानी का विशिष्ट स्थान है। बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न मटियानी जी की लेखनी सभी विधाओं पर एक साथ चली है। 'होनहार विरवान के होत चिकने पात' यह कहावत मटियानी जी पर अक्षरश लागू होती है। कथाकार मटियानी जी का जनम अल्मोड़ा में हुआ था जो कि प्राकृतिक सौन्दर्य से पूर्ण है। अपना बचपन इन्होंने यही व्यतीत किया। मटियानी जी ने 1948 के आस–पास लेखन कार्य आरम्भ किया, इसके बाद ये कभी भी पीछे मुड़कर नहीं देखें, इनकी लेखनी कहानी, उपन्यास, डायरी, कविता आदि विधाओं पर जबतक जीवित रहे अवाध रूप से चलती रही। 'मटियानी जी' जीवन भर गरीबी का अभिशाप झेलते रहे वे चाहते तो अपनी इन दरिद्रता से सहज ही मुक्ति पा सकते थे लेकिन अपनी भौतिक इच्छाओं को कभी स्वाभिमान के आगे नहीं आने दिया। सम्पूर्ण जीवन यातनाओं से भरा होने के बाद भी ये टूटे नहीं ऐसा मजबूत आत्मशक्ति मटियानी जी में थी कि उनके निकट आनेवाला प्रत्येक व्यक्ति यह अनुभव कर सकता था।

मटियानी जी में कूट–कूट कर स्वाभिमान भरा हुआ था और वे अपनी लेखकीय अस्मिता के प्रति सदैव सजग एवं सक्रिय रहते थे। अपने ऊपर किये गए किसी के उपकार को ये कभी नहीं भूलते थे लेकिन इनकी कृतज्ञता के भाव में दीनता नहीं रहती थी, अपने अनेक अभावों के बावजूद अपना आत्म–सम्मान बचाकर रखते थे। कुछ लोगों ने इन्हें कुचक्र रचकर बहुत लांछित करने का प्रयास किया जिसके कारण मटियानी जी को गहरी ठेस लगी मगर अपने लेखकीय क्षमता को कभी कम नहीं होने दिया बल्कि इनकी कलम की धार और अधिक तीक्ष्ण हो गई तेज हो गयी।

मटियानी जी का साहित्यिक संसार किताबी विद्यता पर नहीं बल्कि संसार के अनुभवों पर आधारित था और इन्होंने एक से एक उच्च स्तरीय कहानियाँ एवं उपन्यास हिन्दी साहित्य को दिया। इनका प्रवेश ही साहित्य जगत में बेहतरीन कहानियाँ और उपन्यास के साथ हुआ। ये पहले ऐसे लेखक हैं जिन्होंने पहाड़ों के रोमांटिक रूप को तोड़कर उसके यथार्थ को सामने रखा जहाँ गरीबी है, भूखमरी है, उत्पीड़न है। इनकी पहाड़ी कहानियों में जीवन और प्रकृति का संबंध बहुत ही धना और महीन गुंथा हुआ है। एक कथाकार के रूप में मटियानी का सबसे प्रिय क्षेत्र है– पारिवारिकता या दाम्पत्य संबंध। अपने कथा साहित्य में दाम्पत्य संबंधों पर मटियानी जी ने कई अविस्मरणीय कहानियाँ दी है जिसमें 'शख्य की ओर, सावित्री, कुतिया के फूल, छाक, सुहागिन, अर्द्धागिनी, हरीतिमा, असमर्थ उतरापथ आदि प्रमुख है। ये कहानियाँ कई अर्थों में भारतीयता की पहचान कराती है, ऐसा लगता है मानो ये कहानियाँ हिन्दुस्तानी कहानी की जड़ों को खोज रही हो। 'मटियानी जी ने एक छोटी–सी धारा राजनीतिक कहानियों की भी बहायी है जिसमें 'नेताजी की चुटिया', 'भेड़े और गड़ेरिया', जुलूस, हत्यारे आदि है।

'मटियानी जी' की कुछ और कालजयी और नायाब कहानियाँ हैं जो हिन्दी कथा साहित्य में अमर हो गई है जैसे– इब्बू मलंग, रहमतुल्ला, पोस्टमैन,

प्यास, दो दुःखों का एक सुख एवं चील। लेखक की रचना की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें जीवन के तमाम रंग छवियाँ और ऐसी–ऐसी मुद्राएँ हैं जो जितनी बार पढ़ों उतनी बार अलग–अलग ढंग से लुभाती है तथा हमेशा नयी लगती है, नये–नये अर्थ खुलते एवं जगमगाते नजर आते हैं। यही कला का सच्चा सौन्दर्य है, ये मटियानी जी की कथा कौशलता है जो इन्हें एकदम से प्रेमचंद के बगल में बैठा देता है, इसलिए इन्हें कद्दावर कथाकार की श्रेणी में रखा गया है जा एकदम सही है। यों तो हम इनकी रचनाओं को जब पढ़ते हैं तब ऐसा प्रतीत होता है मानों मटियानी जी मुख्यतः आंचलिक साहित्यकार हैं। इनके जीवन का संबंध मुख्य रूप से दो स्थानों पर अधिक रहा है इसलिए इनके कथा क्षेत्र भी इन्हीं दो जगहों के इर्द–गिर्द घुमती नजर आती है– जैसे कुमायुँ और बम्बई। वे कहानियाँ है– 'बोरीवली से बोरीबन्दर तक, कबूतरखाना, होलदार, किस्सा नर्वदा बेन गगूँबाई, पुर्नजन्म, चिट्ठी रसैन, चौथी मुट्टी, मुख सरोवर के हंस तथा एक मूठ सरसों – ये सभी आंचलिक उपन्यास ही है जिसमें अंचल विशेष की लोक संस्कृति, धार्मिक आस्था, पारिवारिक दृश्य, राजनीतिक परिदृश्य का सूक्ष्म और मनोरम चित्र उपस्थित है।

स्वातंत्र्योत्तर साहित्यकारों में शैलेश मटियानी ऐसे विशिष्ट साहित्यकार हैं जिन्होंने लेखन को ही अपने जीविकोपार्जन का साधन बनाया था। इनका साहित्य प्रेक्षक का नहीं, भोक्ता का है। इनका साहित्य सहानुभूति का आधार नहीं बल्कि स्वानुभूति का आधार है इसीलिए इनके कथा साहित्य के पात्र भी अभावग्रस्त जीवन जीते हैं और आर्थिक विषमताओं से जूझते रहते हैं। लेखक के अनुसार रोटी, कपड़ा और मकान व्यक्ति की प्राथमिक और स्वाभाविक आवश्यकताएँ हैं इसीलिए इनके पात्र भी इसी के लिए संघर्ष करते रहते हैं। इनके कहानियों के कई पात्र तो सिर्फ रोटी के जुगाड़ में तन का सौदा करने के लिए विवश हैं। इनके रचनाओं की भाषा शैली, कथावस्तु, संवाद शैली आदि इतनी समृद्ध संवेदनशील एवं समर्थ है कि वह कहीं भी अटकती नहीं है किसी भी भाव का चित्रण करने में भाषा बहती सी चली जाती है। इनकी भाषा जन–जन की भाषा है, जो सबके ह्रदय को छूती है। एक ओर धनिक वर्ग की विलासिता शासन के कर्मचारियों का अमानवीय व्यवहार और दूसरी ओर फुटपाथों, रेलवे स्टेशनों पर कराहती मानवता के यथार्थ चित्रण द्वारा कथाकार ने गरीबों की संवेदना को उभारने में सफलता प्राप्त की है, साथ ही वेश्याओं के जीवन की यथार्थ झाँकी प्रस्तुत करते हुए शरीर बेचने के लिए उनकी विवशता का कटू सच को उजागर किया है तथा सहानुभूति दिखलाते हुए उनके द्वारा भी कर वसूलने वाले शासनतंत्र पर व्यंग्य किया है। इन्होंने अपने जीवन में भूख, स्त्री और मौत इन तीनों से ही संघर्ष कर संवेदनाएँ ग्रहण की है। ये अनुभूतियाँ एवं संवेदनाएँ इनकी समस्त रचनाओं में दिखलायी पड़ती है, गरीबी का ऐसा सच्चा तस्वीर खींचा है कि देखने वाले द्रवीभूत हो जाए। इस तरह लेखक ने अनुभूतियों एवं संवेदनाओं के धरातल पर मानवता की सच्ची परख दी है। उनकी दृष्टि में रचनाकार की श्रेष्ठता एवं सफलता उसके सच्चे अर्थों में मनुष्य होने में हैं। मनुष्यता की शिक्षा रचनाकार को संत्रास, यंत्रणा एवं विपतियों की पाठशाला में ही मिलती है। ये संत्रास और यंत्रणा इन्हें अपने जीवन से ही मिली है, शायद इसीलिए इनके रचनाओं में इन्हीं का दर्द फुटकर निकला है। इसमें दिखावा या कल्पना की गुंजाइश नहीं है इनकी कहानियों में रोटी के लिए जिस्म बेचती नारियों, बेघर पति–पत्नियों, लावारिसों और भिखमंगों के जीवन का दयनीय यथार्थ नग्न रूप खोलकर हमारे सामने रख देती है। मानव जीवन का यह कटु यथार्थ शायद ही किसी और लेखक ने कहानी के माध्यम से इतनी तीव्रता के साथ उजागर किया हो, जो मनुष्य की संवेदना को पूरी तरह झकझोर डालता है।

'शैलेश मटियानी' के कथा साहित्य में उपमाएँ और बिम्ब महत्वपूर्ण हो जाते हैं वे व्यवहार और आचरण को तो रेखांकित करते ही है जीवन के प्रति आस्था को भी गहराते जाते हैं। यह उनकी रचनाओं का मजबूत पक्ष है। मटियानी जी के लेखन शैली की एक विशेषता यह भी है कि उनकी भाषिक संरचना जिसके प्रवाह में बहते हुए लगता है जैसे कोई चित्रकार कवि कहानी सुनाने बैठा है, बारीक रेखाओं से युक्त चित्रों की सजीवता और काव्यमय भाषा की कोमल मधुर ध्वनियों के साथ लाक्षणिक व्यंजना मिलित अभिव्यक्तियाँ छोटी–छोटी घटनाओं को भी विशेष बनाकर चित्र पर अंकित कर देती है। कहानी उपन्यासों में काव्य माधुर्य की यह खुशबू उन्हें पहाड़ों से मिली है। लोक भाषा, लोक–साहित्य तथा लोक–मान पर ये बिंब शायद शैशवकाल से ह उनके मन पर अंकित थे। यही कारण है कि उनके कथा साहित्य में मुहावरे उपमाएँ बिम्ब, प्रतीक, गाली, आंचलिकता, शोक, हर्ष आदि का बेजोड़ प्रयोग हुआ है। इसी से इनकी भाषा में सौन्दर्य और कहानी में रोचकता पायी जाती है। मटियानी जी ने कहानी को नया शिल्प और नई भाषा देकर कहानी में उर्वरता प्रदान की है। इन्होंने आलंकारिकता से युक्त एक समृद्ध शैली हिन्दी साहित्य को दी है।

मटियानी जी की कथा शैली की विशेषताओं को इनके समकालिन कथाकारों से तुलना करते हैं तो पाते हैं कि स्वातंत्र्योत्तर युग के जितने भी कथाकार हैं उनमें एक सशक्त हस्ताक्षर मटियानी जी भी हैं। मटियानी जी का व्यक्तित्व हम सभी के लिए प्रेरणास्रोत है क्योंकि उनका लेखन बहुत ही प्रभावी है, जिसमें हमारे समाज का यथार्थ बेवाकी और निर्ममता से उभरकर सामने आते हैं जो कि काफी पीड़ादायक है। मटियानी का लेखन समाज को बहुत कुछ दिया, वे समाज के दबे कुचले लोगों की आवाज बनकर उभरे। वे हिन्दी के शीर्षस्थ कहानीकार थे, यह कहा जाए तो अतिश्योक्ति नहीं होगी कि वे प्रेमचंद के बाद सबसे बड़े जन कथाकार थे। इन्हें कथा–पुरुष भी कहा जाता है। इनके रचनात्मक जीवन दर्शन को एक साथ निष्कर्षात्मक रूप में रेखांकित करना कठिन है। मटियानी जी के अंदर व्यवहार कुशलता, आतिथ्य, दया, करुणा, सौहार्द, प्रेम सभी मानवीय गुण थे अहंकार तो इन्हें छु भी नहीं सका था। इनका यह गुण इनके कथा साहित्य को भाव पूर्ण बनाती है। इनकी कहानियाँ जहाँ एक ओर हिन्दी कहानी की विकास यात्रा का सफल प्रतिनिधित्व करती है वही दूसरी ओर मानवीय विडम्बनाओं

एवं सूक्ष्मताओं को सफलता के साथ अभिव्यक्त करती है तथा हिन्दी साहित्य को एक नवीन दिशा देती है।

अध्ययन का उद्देश्य

स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी साहित्यकारों में शैलेश मटियानी एक विशिष्ट साहित्यकार के रूप में जाने जाते हैं। मटियानी जी किसी काल वाद या संस्था के पुरोधा नहीं थे और न ही साहित्य की दुनिया में दबदबा ही था। ये एक ऐसे लेखक थे जिन्होंने लेखन को ही जीविकोपार्जन का साधन बनाया था। इनका साहित्य प्रेक्षक का नहीं बल्कि भोक्ता का है। ऐसे संघर्षशील लेखक का जीवनी बताना ही इस आलेख का उद्देश्य है। रोटी, कपड़ा और मकान व्यक्ति की प्राथमिक और स्वाभाविक आवश्यकताएँ है, जिससे जूझते हुए भी मटियानी जी ने इतने उत्कृष्ट रचनाओं से साहित्य का खजाना भरा है। इनके पास एक ऐसी समर्थ ओर संवेदनशील भाषा है, जो कहीं अटकती नहीं है बल्कि भाव का चित्रण करने में भाषा बहती सी चली आ रही है। यही दर्शाना इस आलेख का महत्वपूर्ण उद्देश्य है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत आलेख शैलेश मटियानी का कथा संसार का निष्कर्ष यह है कि इन्होंने हिन्दी साहित्य को अपनी रचनाओं के द्वारा नवीनता लाने का प्रयास किया है। अर्थ मनुष्य के सम्पूर्ण जीवन को प्रकाशित करता है। एक परिवार के सम्पूर्ण जिम्मेदारियों का निर्वहन करते हुए मटियानी जी ने अथक परिश्रम से जीवन से संबंधित, जीवन में संघर्ष करने की प्रेरणा देने वाली रचनाएँ संसार को दी है। दूसरी बात है कि मटियानी जी की मनुष्य में और मनुष्यता में अटूट आस्था थी जिसके कारण वह मानव मात्र में अंत तक अपना विश्वास बनाये रखने में कामयाब रहे और यह आस्था कई बार दरकी पर अपने आत्म बल से कभी मटियानी जी ने टूटने नहीं दिया। विश्वास का यही डोर उन्हें व्यक्ति और समाज के अच्छाईयों से बाँधे रही जिसके कारण मटियानी जी ने एक साधारण सिपाही से लेकर उच्च पदस्थ लोगों तक में इन्होंने जो देवत्व का अंश देखा अपनी रचनाओं में जस के तस स्वीकार कर अपनी रचनाओं में उतार भी दिया। वस्तुतः यही संदेश देना अर्थात मानवता का मानवता के प्रति करुणा, दया तथा समानता का भाव देना ही लेखक का रहा होगा। इसीलिए इनकी समस्त रचनाओं में कटु यथार्थ होने के बाद भी उपरोक्त सभी भाव दिखते हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *कबूतरखाना, आत्माराज एंड संस, दिल्ली, सं० 1960*
2. *भागे हुए लोग, किताब महल, इलाहाबाद, सं० 1966*
3. *शैलेश मटियानी : व्यक्तित्व और कृतित्व, उर्वीशचंद मिश्र, साहित्य भंडार, इलाहाबाद, 2004*
4. *साहित्य निबंध, डॉ० मिश्र/डॉ० चतुर्वेदी, प्रकाशन केन्द्र, लखनऊ*
5. *दो दुःखों का एक सुख, नई कहानियाँ, सं० 1963, पृष्ठ संख्या 125*
6. *शैलेश मटियानी : लिखना एक आहट पैदा करना है, दिनेश कर्नाटक, दैनिक जागरण (नेट से प्राप्त)*
7. *शैलेश : जीवंत पात्रों का चितेरा, डॉ० कमल कुमार बोस, हिन्दुस्तान अखबार, 14 मार्च 2010*